UNIVERSITY NEWS 03 NOVEMBER 2025

DAINIK JAGRAN

वीएससी की प्रयोगात्मक परीक्षाएं 10 से

लखनऊ विश्वविद्यालय ने बी.एससी केमिस्ट्री पहले व तीसरे सेमेस्टर की प्रयोगात्मक परीक्षाओं की समय सारिणी जारी की है। तीसरे सेमेस्टर की प्रयोगात्मक परीक्षा 10 से 12 नवंबर और तीसरे सेमेस्टर की दो से चार दिसंबर तक होगी। वहीं, बी.एससी पांचवें सेमेस्टर केमिस्ट्री में इंटर्नशिप की वायवा परीक्षा 21 नवंबर को दोपहर 12 बजे से होगी। विभागाध्यक्ष प्रो. वीके शर्मा ने बताया कि एम.एससी केमिस्ट्री की प्रयोगात्मक परीक्षाएं 13 नवंबर से 12 दिसंबर तक होंगी।

AMRIT VICHAR

चिंता

लखनऊ विश्वविद्यालय के शोध में सामने आया चौंकाने वाला सच

आंत के सूक्ष्मजीवों से होता मधुमेह और मोटापा

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- आंतों में मौजूद बैक्टीरिया, फफूंद, वायरस और यीस्ट भोजन पचाने में हैं सहायक

अमृत विचारः लखनऊ विश्वविद्यालय के शोधार्थियों ने पाया है कि मनुष्य की आंत के सूक्ष्मजीव हमारे पाचन तंत्र के अंदर रहने वाले सूक्ष्मजीवों का विशाल समुदाय हमारे चयापचय स्वास्थ्य को नियंत्रित करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रदीप कुमार, शोधार्थी विश्वायस गौर और जैव रसायन विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मधु कमले व अन्य संस्थानों के शोध सहयोगियों के साथ मिलकर यह शोध किया गया है। यह अध्ययन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस शोध में यह बताया गया है कि संतुलित और स्वस्थ आंत माइक्रोबायोम को बनाए रखना मोटापा, मधुमेह और मेटाबोलिक सिंड्रोम जैसी जीवनशैली संबंधी बीमारियों की रोकथाम के लिए अत्यंत आवश्यक है। गट माइक्रोबायोटा से तात्पर्य है कि हमारे शरीर की आंतों में प्राकृतिक रूप से रहने वाले लाखों करोड़ों सूक्ष्मजीवों से है। जिनमें बैक्टीरिया, साथ ही फफूंद, वायरस और यीस्ट भी शामिल होते हैं।

ये सूक्ष्मजीव हमारे भोजन को पचाने, पोषक तत्वों को अवशोषित करने, विटामिन बनाने तथा हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जब ये लाभदायक सूक्ष्मजीव सही संतुलन में रहते हैं, तो वे अच्छा पाचन, मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली और संतुलित चयापचय बनाए रखने में सहायक होते हैं। इनका संतुलन बिगड़ते ही डिसबायोसिस कहा जाता है, तब यह स्थिति सूजन, कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता, मोटापा या मधुमेह जैसी बीमारियों को जन्म दे सकती है।

आहार कैसे आंत के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है

- हमारा आहार सीधे तौर पर हमारे आंत के सूक्ष्मजीवों की संरचना और गतिविधियों को प्रभावित करता है। फाइबर से भरपूर भोजन (जैसे फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज), प्रीबायोटिक्स (पौधों से प्राप्त प्राकृतिक यौगिक जो लाभदायक जीवों को पोषण देते हैं), प्रोबायोटिक्स (जैसे दही या किण्वित खाद्य पदार्थों में पाए जाने वाले जीवित लाभदायक बैक्टीरिया) स्वस्थ सूक्ष्मजीवों के विकास को बढ़ावा देते हैं।

हमारा शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि आंत हमारे स्वास्थ्य का एक केंद्रीय नियामक है। जो भोजन हम करते हैं, विशेष रूप से फाइबर, प्रीबायोटिक्स और प्रोबायोटिक्स से भरपूर आहार आंत के सूक्ष्मजीवों की विविधता को बढ़ाता है, जो आगे चलकर हमारे स्वास्थ्य को नियंत्रित करता है। इस प्राकृतिक साझेदारी को समझना और उसमें मोटापा बीमारियों की रोकथाम और उपचार के तरीके को पूरी तरह बदल सकता है।

-डॉ. प्रदीप कुमार, शोधकर्ता, वनस्पति विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

मेडल लेतीं लविवि शिक्षिका डॉ. आदित्य आभा सिंह।

लविवि की शिक्षिका को मिला मेडल

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. आदित्य आभा सिंह को ऑल इंडिया बॉटैनिकल सोसाइटी द्वारा प्रो. वाई.एस. मूर्ति मेडल 2025 से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान 48वीं ऑल इंडिया बॉटैनिकल कॉन्फ्रेंस एवं "बायोलॉजी एंड बायोटेक्नोलॉजी ऑफ प्लांट डायवर्सिटी फॉर बायोइकोनॉमी" अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान प्रदान किया गया। जिसका आयोजन 29 से 30 अक्टूबर तक नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलांग में किया गया। प्रो. वाई. एस. मूर्ति मेडल भारतीय वनस्पति विज्ञान जगत में एक महत्वपूर्ण सम्मान माना जाता है, जो हर वर्ष उत्कृष्ट शोध कार्य करने वाले शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों को प्रदान किया जाता है।

PIONEER

Research underscores importance of gut

PIONEER NEWS SERVICE
Lucknow

A recent collaborative mini- review led by Associate Professor, Department of Botany, University of Lucknow, Dr Pradeep Kumar, along with research scholar Vishwas Gaur and Associate Professor, Department of Biochemistry, Dr Madhu Kamle, along with research collaborators from other institutions, has shed new light on how the human gut microbiota that is the vast community of microorganisms living inside our digestive system plays a central role in regulating metabolic health.

The study, published in an internationally recognized journal is titled 'Microbiome-based therapeutics for metabolic disorders: harnessing microbial intrusions for treatment.'

It explores how maintaining a balanced and healthy THE FOODS WE EAT, ESPECIALLY THOSE RICH IN FIBRES, PREBIOTICS, AND PROBIOTICS DIRECTLY INFLUENCE MICROBIAL DIVERSITY, WHICH IN TURN SHAPES OUR METABOLISM.

gut microbiome is crucial to preventing lifestyle-related disorders such as obesity, diabetes and metabolic syndrome.

The gut microbiota refers to trillions of microscopic organisms mainly bacteria, but also fungi, viruses and yeasts that naturally live in our intestines. These tiny organisms help digest food, absorb nutrients, produce vitamins and protect us from harmful germs. When beneficial microbes thrive, they support good digestion, strong immunity and balanced metabolism.

However, when their balance is disturbed, a condition known as dysbiosis it can lead to inflammation, weakened immunity and diseases such as obesity and diabetes.

"The review emphasizes that the food we eat directly affects the composition and activity of microbes in our gut. Diets rich in dietary fibres (from fruits, vegetables, and whole grains), prebiotics (natural plant compounds that feed good bacteria) and probiotics (live beneficial bacteria found in foods like yogurt and fermented products) promote the growth of healthy microbes," said Dr Pradeep Kumar.

"Our research underscores the importance of gut as a central regulator of health. The foods we eat, especially those rich in fibres, prebiotics, and probiotics directly influence microbial diversity, which in turn shapes our metabolism. Harnessing this natural partnership can revolutionise how we prevent and treat metabolic diseases," said Dr Pradeep Kumar.

TOI

LU assistant prof bags YS Murty medal

Lucknow: Assistant professor in botany department of Lucknow University, Aditya Abha Singh, has been conferred the prestigious Prof YS Murty Medal (2025) by the All India Botanical Society (AIBS).

The award was presented during the 48th All India Botanical Conference of the Indian Botanical Society and International Symposium, hosted at North Eastern Hill University (NEHU), Shillong, on Oct 29-30. Singh has been honoured for her significant research on the responses of C4 plants. TNN

PIONEER

डॉ. आदित्य आभा सिंह को प्रो. वाईएस मूर्ति मेडल 2025 से किया गया सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. आदित्य आभा सिंह को ऑल इंडिया बॉटैनिकल सोसाइटी (एआईबीएस) द्वारा प्रतिष्ठित प्रो. वाईएस मूर्ति मेडल (2025) से सम्मानित किया गया है।

यह सम्मान 48वीं ऑल इंडिया बॉटैनिकल कॉन्फ्रेंस एवं बायोलॉजी एंड बायोटेक्नोलॉजी ऑफ प्लांट डायवर्सिटी फॉर बायोइकोनॉमी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान प्रदान किया गया। जिसका आयोजन नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (एनईसयू), शिलांग में किया गया। डॉ. सिंह को यह सम्मान उनके सी-4 पौधों (विशेषकर मक्का) पर वायुमंडलीय प्रदूषक ओजोन के प्रभाव तथा जलवायु परिवर्तन से जुड़े कारकों जैसे बढ़ते कार्बन डाइऑक्साइड स्तर के साथ उसकी अंतःक्रिया पर किए गए महत्वपूर्ण शोध के लिए दिया गया है। अपने पुरस्कार व्याख्यान में उन्होंने बताया कि ट्रोपोस्फेरिक ओजोन मक्का की उपज में गिरावट लाता है तथा उसके पोषण स्तर को भी प्रभावित करता है, जो भविष्य की खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है। डॉ. सिंह ने अपने शोध मार्गदर्शक और संरक्षक प्रो. एसबी अग्रवाल, एनएएसआई वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन ने इस शोध को दिशा दी।

AMAR UJALA

हमारी आंतों में छिपा है सेहत का राज

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. प्रदीप कुमार ने अपने अध्ययन में दावा किया है जब हमारी आंतों और आहारनाल में गुड बैक्टीरिया का संतुलन बिगड़ता है तो शरीर में सूजन, मोटापा और मधुमेह जैसी बीमारियां जन्म लेने लगती हैं। वनस्पति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रदीप कुमार के साथ शोधार्थी विश्वास गौर और जैव रसायन विभाग की डॉ. मधु कमले ने अपने सहयोगियों के साथ यह अध्ययन किया है, जिसमें बताया गया है कि आंत में रहने वाले सूक्ष्मजीव हमारे मेटाबॉलिक हेल्थ के सबसे बड़े नियंत्रक हैं। फाइबर, फल, सब्जियां, साबुत अनाज, दही और किण्वित खाद्य पदार्थ हमारे आंत में अच्छे जीवाणुओं की संख्या बढ़ाते हैं। (माई सिटी रिपोर्टर)

NBT

डॉ. आदित्य आभा को वाइएस मूर्ति मेडल

NBT रिपोर्ट, लखनऊ : LU के बॉटनी विभाग की डॉ. आदित्य आभा सिंह को ऑल इंडिया बॉटनिकल सोसाइटी की ओर से वाइएस मूर्ति मेडल से सम्मानित किया गया है। शिलॉन्ग में आयोजित ऑल इंडिया बॉटनिकल कॉन्फ्रेंस के दौरान डॉ. आभा को यह सम्मान दिया गया। प्लांट

साइंस के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय शोध के लिए उन्हें इस सम्मान से नवाजा गया है।